Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिरिहिल अज़ीज़ दिनांक 13.11.15 स्थान बैतुल फ़तूह लंदन।

केवल अल्लाह के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यदि प्रेम एंव बन्धुत्व की प्रतिज्ञा का कोई उदाहरण दिया जा सकता है तो वह हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन रज़ीअल्लाहु अन्हु का उदाहरण है। आज्ञापालन स्वीकार करने के पश्चात यदि उसके उच्चतम स्तर दिखाकर उस पर दृढ़ता से जमे रहने का कोई उदाहरण दिया जा सकता है तो वह मौलाना नूरुद्दीन का है। समस्त सांसारिक रिश्तों से बढ़कर बैअत की प्रतिज्ञा पूरी करते हुए यदि किसी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सम्बंध जोड़ा तो उसकी सर्वोत्तम उपमा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम की है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु को जो इश्क़ एंव मुहब्बत का सम्बंध हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से था उसे प्रत्येक वह अहमदी जिसने आपके विषय में कुछ न कुछ पढ़ा हो या सुना हो, जानता है। केवल अल्लाह के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यदि प्रेम एंव बन्धुत्व की प्रतिज्ञा का कोई उदाहरण दिया जा सकता है तो वह हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन रज़ीअल्लाहु अन्हु का उदाहरण है। आज्ञापालन स्वीकार करने के पश्चात यदि उसके उच्चतम स्तर दिखाकर उस पर दृढ़ता से जमे रहने का कोई उदाहरण दिया जा सकता है तो वह मौलाना नूरुद्दीन का है। समस्त सांसारिक रिश्तों से बढ़कर बैअत की प्रतिज्ञा पूरी करते हुए यदि किसी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सम्बंध जोड़ा तो उसकी सर्वोत्तम उपमा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम की है। सेवकीय दशा के बेमिसाल नमूने का अतुल्य नमूना यदि किसी ने स्थापित किया तो वह हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना नूरुद्दीन ने क़ायम किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सामने विनयता एंव नम्रता में यदि हमें कोई चरम सीमा पर नज़र आता है तो अहमदिया जमाअत के इतिहास में इसका भी उच्चतम स्तर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने स्थापित किया और फिर इमामुज़्ज़माँ हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वह सज्ञान प्राप्त किया जो किसी अन्य को नहीं मिल सका। आप अलैहिस्सलाम ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के बारे में फ़रमाया कि

''चै ख़ुश बूदे अगर हर यक ज़ा मत नूर दीं बूदे''

अतः यह एक महान सम्मान है जो कि ज़माने के इमाम ने अपने मानने वालों के लिए हर चीज़ का स्तर हज़रत मौलाना नूरुद्दीन के स्तर को बना दिया कि यदि हर एक नूरुद्दीन बन जाए तो एक क्रान्ति आ सकती है। हज़रत मुस्ले मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के कुछ वृत्तांत बयान फ़रमाए हैं। इन घटनाओं को पढ़कर आक़ा व ग़ुलाम, गुरु व शिष्य के परस्पर सम्बंध एंव प्रेम के उदाहरण नज़र आते हैं। विनम्रता एंव विनयता के नमूने भी नज़र आते हैं, निष्ठा एंव श्रद्धा के नमूने भी नज़र आते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की क़ुर्बानियों के स्तर तथा आज्ञापालन के उच्चतम नमूनों का वर्णन करते हुए एक स्थान पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया कि एक बार जब आप क़ादियान आए तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- मुझे आपके विषय में इलहाम हुआ है कि यदि आप अपने वतन गए तो अपना सम्मान खो बैठेंगे। इस पर आपने घर वापस जाने का नाम तक न लिया। उस समय आप अपने वतन भैरा में एक शानदार मकान बना रहे थे। कुछ दोस्तों ने कहा भी कि आप एक बार जाकर मकान तो देख आएँ परन्तु आपने फ़रमाया कि मैंने उसे ख़ुदा तआला के लिए छोड़ दिया है अब उसे देखने की क्या आवश्यकता है।

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु एक अन्य घटना बयान करते हैं जब अंजुमन के कुछ मुज़्या अपने आपको बुद्धिमान समझने लग गए थे तथा भौतिकवाद को रंग उनपर ग़ालिब आ रहा था। बहुत सी बातें जब अंजुमन में पेश होतीं तो साधारणतः हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल तथा हज़रत मुस्लेह मौऊद का विचार एक होता था तथा कुछ अन्य बड़े सक्रिय सदस्यों का विचार विभिन्न होता था। इस प्रकार एक ऐसे ही अवसर पर एक मजलिस में सवाल पेश हुआ, तअलीमुल इस्लाम हाई स्कूल

को बन्द करने का मामला पेश हुआ। हज़रत मुस्ले मौऊद उसको बन्द करने के विरुद्ध थे हज़रज ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की सोच भी यही थी कि इसको बन्द न किया जाए। इस घटना का, इस पर बड़ी गम्भीर चर्चा हो रही थी। अन्ततः निर्णय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में पेश होना था। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल क्यूँकि आदर के कारण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सामने बात न कर सकते थे इस लिए आपने मुझे अपना माध्यम तथा हथ्यिार बनाया हुआ था। वे मुझे बात बता देते और मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पहुंचा देता। अन्ततः अल्लाह तआला ने हमें सफलता प्रदान की। इस बात से हज़रज ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सामने बात करने के अदब व सम्मान का भी पता चलता है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल के विवेक का वर्णन करते हुए, आपके ईमान का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि यह बयान करते हुए कि क़ौमें किस प्रकार बनती हैं। मनुष्यों के द्वारा राष्ट्र का निर्माण होता है तथा राष्ट्र के द्वारा मनुष्य तैय्यार होते हैं। बलवान बुद्धि के मालिक बुद्धिमान तथा नेक इंसान राष्ट्र के लिए अत्यधिक लाभदायक होते हैं। और उच्च स्तरीय तथा नेक उद्देश्य अच्छे एंव होशियार लोगों के हाथों में आकर अत्यधिक लाभप्रद होते हैं और फिर यह बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी जमाअत क़ायम की, आपके साथ भी अल्लाह तआला ने यही व्यवहार किया कि आपके दावे के आरम्भ में ही कुछ ऐसे लोग आप अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए जो कि व्यक्तिगत प्रतिभा की दृष्टि से उत्तम सेवाएँ देने वाले थे तथा इस काम में आपकी सहायता करने वाले थे जो अल्लाह तआला ने आपके हवाले किया था और उनमें से एक हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल भी थे। एक व्यक्ति ने जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रति दुर्भावना रखता था आपकी पुस्तकों में नबुव्वत के जारी रहने के विषय में पढ़ा तो उसने अपने साथ कुछ लोग लिए और धीरे धीरे हज़रत मौलवी साहब की ओर चले। जब आपके पास पहुंचे तो उस व्यक्ति ने हज़रत मौलवी साहब से कहा कि यदि कोई व्यक्ति कहे कि मैं इस ज़माने के लिए नबी बनाकर भेजा गया हूँ और रसूल-ए-करीम सलल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उम्मते मुहमदिय्या में नबुव्वत जारी है तो आप उसके विषय में सोचेंगे। हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ने फ़रमाया कि इस प्रश्न का उत्तर तो दावा करने वाले की दशा पर निर्भर है कि क्या वह इस दावे का अधिकारी है कि नहीं। यदि यह दावा करने वाला व्यक्ति सत्य पुरुष न होगा तो हम उसे झूठा कहेंगे और यदि दावा करने वाला कोई सदाचारी व्यक्ति है तो मैं यह समझूंगा कि ग़ल्ती मेरी है। वास्तव में नबी आ सकता है, निःसन्देह मिर्ज़ा साहब ने जो कुछ लिखा है वह सत्य है तथा मेरा उस पर ईमान है।

हज़रत मुस्ले मौऊद फ़रमाते हैं कि हज़रज ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की एक बहिन एक पीर साहब की शिष्य थीं। वह क़ादियान में आईं, उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत कर ली। जब वापस गईं तो उनके पीर साहब कहने लगे कि तुझे क्या हो गया है कि तू ने मिर्ज़ा साहब की बैअत कर ली? उन्होंने कहा कि मैंने तो मिर्ज़ा साहब को इस लिए माना है कि यदि आपको न माना तो क़्यामत के दिन मुझे जूतियाँ पड़ेंगी, आप बताएँ कि आप उस दिन क्या करेंगे? वह पीर कहने लगा कि यह नुरुद्दीन का किया धरा लगता है, उसी ने तुझे यह बात समझाकर मेरे पास भेजा है परन्तु तुझें इस विषय में किसी भय की आवश्यकता नहीं। जब क़्यामत का दिन आएगा तथा पुल सिरात पर सब लोग इकट्ठा होंगे तो तुम्हारे पाप मैं स्वयं उठा लूंगा और तुम दगड़ दगड़ करते जन्नत में चली जाना। उन्होंने कहा- पीर साहब हम तो जन्नत में चले गए फिर आपका क्या बनेगा? वे कहने लगे कि जब फ़रिश्ते मेरे पास आएँगे तो मैं उन्हें लाल लाल आँखें दिखाकर कहूँगा कि हमारे नाना इमाम हुसैन की शहादत काफ़ी नहीं थी कि आज क़्यामत के दिन भी हमें सताया जा रहा है। अन्ततः यह सुनकर फ़रिश्ते लज्जित होकर दौड़ जाएँगे तथा हम ज़ी छलांगे मारते हुए जन्नत में प्रवेश कर लेंगे।

हज़रज ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की सादगी तथा आज्ञा पालन का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि हमने स्वयं ख़लीफ़ः अव्वल को देखा है, आप मज्लिस में बड़ी विनम्रता पूर्वक बैठा करते थे। एक बार मज्लिस में शादियों की चर्चा हो रही थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मौलवी साहब जमाअत के बढ़ने एक साधन संतान की वृद्धि भी है इस लिए मेरा विचार है कि यदि जमाअत के दोस्त एक से अधिक शादियाँ करें तो इसके द्वारा ज़ी जमाअत बढ़ सकती है। हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ने घुटनों से सिर उठाया और फ़रमाया कि हुज़ूर मैं तो आपका आदेश मानने के लिए तैय्यार हूँ परन्तु इस आयु में मुझे कोई व्यक्ति अपनी लड़की देने के लिए तैय्यार नहीं होगा। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हंस पड़े। तो देखो, हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं, देखो यह विनम्रता और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आदर था जिसके कारण उन्हें यह पद प्राप्त हुआ। अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए। क्यूँकि उन्होंने उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना जब सारी दुनिया आपकी विरोधी थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात कि जमाअत की

संज़्या बढ़ाने का एक साधन संतान में वृद्धि भी है। आप फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब हमारी शादियाँ निश्चित फ़रमाईं तो सबसे पहले यह सवाल करते थे कि अमुक व्यक्ति के यहाँ कितनी संतान है, वे कितने भाई हैं, आगे उनकी कितनी संतानें हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि अब भी कुछ लोग जब मुझसे परामर्श लेते हैं तो मैं उनको यही परामर्श देता हूँ कि देखो जहाँ रिश्ते तय हुए हैं उनके यहाँ कितनी औलाद है? आजकल के ज़माने में परिवार नियोजन पर बहुत बल दिया जाता है परन्तु ऐसे देश जहाँ इस पर अत्यधिक ज़ोर दिया गया उनमें अब यह भावना उत्पन्न हो रही है कि यह अनुचित है। जब इंसान क़ुदरत के क़ानून से लड़ने का प्रयास करता है तो समस्याएँ पैदा होती हैं। अतः यह एक अलग बात थी जो बीच में आ गई।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु हज़रज ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की श्रद्धा, विनम्रता तथा सरल स्वभाव का एक अन्य वृत्तांत बयान करते हैं। फ़रमाते हैं कि सेवा के लिए विभिन्न सामग्री की आवश्यकता होती थी, खाना बनवाने की आवश्यकता होती थी। आरज़्भ के ज़माने में जब क़ादियान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास अतिथि आते थे, सामग्री आदि लाने की आवश्यकता होती थी और यह स्पष्ट बात है कि यह काम केवल हमारे परिवार के लोग नहीं कर सकते थे। अधिकांशतः यही हुआ करता था कि जमाअत के लोग मिल मिलाकर वे काम कर दिया कर देते थे। उस समय तरीक़ा यह था, लंगर ख़ाने का यथावत् प्रबन्ध तो नहीं था कि यदि ईंधन आ जाता और वह भीतर डालना होता अर्थात स्टोर में रखना होता तो घर की सेविका आवाज़ दे देती कि ईंधन आया है कोई आदमी है तो वह आ जाए और ईंधन अन्दर डाल दे। एक बार लंगर ख़ाने के लिए ऊपलों का एक गड्डा आया (वे जो जलाने के उपयोग में आते हैं, ऊपले) बादल भी छाया हुआ था। सेविका ने पुकारा ताकि कोई आदमी मिल जाए तो वह ऊपलों को भीतर रखवा दे परन्तु उसकी पुकार पर किसी ने ध्यान न दिया। आपने जब देखा कि सेविका की आवाज़ की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया तो आपने फ़रमाया कि अच्छा, आज हम ही आदमी बन जाते हैं। यह कह कर आपने ऊपले उठाए और अन्दर डालने शुरु कर दिए।

फिर हज़रज ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो इश्क़ था उसका उदाहरण देते हुए आप फ़रमाते हैं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की आदत थी कि जब आप बहुत प्रसन्न होते तथा प्रेम पूर्वक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विषय में वर्णन करते तो मिर्ज़ा का शब्द प्रयोग में लाते और फ़रमाते कि हमारे मिर्ज़ा की यह बात है। आरज़्भिक दिनों में जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अज़ी दावा नहीं था क्यूँकि आपके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ सज़्बंध थे इसी कारण से उस समय से ही यह शब्द आपकी ज़बान पर चढ़े हुए थे।

फिर दोनों ओर की श्रद्धा एंव प्रेम का एक अन्य उदाहरण। हज़रज ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल में जितनी श्रद्धा एंव निष्ठा थी वह किसी से छिपी नहीं थी किसी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहा कि हज़रत मौलवी साहब सैर के लिए नहीं जाते। आपने फ़रमाया कि वे तो रोज़ाना जाते हैं। इस पर आपको बताया गया कि वे सैर के लिए साथ तो निकलते हैं परन्तु फिर बरगद के नीचे बैठ जाते हैं तथा वापसी पर साथ शामिल हो जाते हैं। अतः इसके बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सदैव हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल को अपने साथ सैर में रखते और जब आपने तेज़ हो जाना और हज़रत ख़लीफः अव्वल ने पीछे रह जाना तो आपने चलते चलते ठहर जाना और फ़रमाना- मौलवी साहब अमुक बात किस प्रकार है। मौलवी साहब तेज़ तेज़ चलकर आपके पास पहुंचते और साथ चल पड़ते तो फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम थोड़ी देर के बाद फिर तेज़ चलना शुरु करते, आगे निकल जाते, थोड़ी दूर जाकर फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ठहर जाते और फ़रमाते- मौलवी साहब अमुक बात इस इस प्रकार है, विभिन्न चर्चाएँ होतीं, मौलवी साहब फिर तेज़ी से आपके पास पहुंचते और तेज़ तेज़ चलने के कारण हाँपने लग जाते परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आपको अपने साथ रखते। तीस चालीस गज़ चलकर मौलवी साहब पीछे रह जाते और आप फिर कोई बात कह कर मौलवी साहब को सज़्बोधित फ़रमाते और वे तेज़ी से आपके साथ आकर मिल जाते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आश्य यह था कि इस प्रकार मौलवी साहब को तेज़ चलने की आदत हो जाए।

फिर एक अन्य उदाहरण जिससे हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल की श्रद्धा भी प्रकट होती है तथा संतोष भी। हज़रत मीर साहब बड़े बीमार हो गए। क़ौलंज (पेट का भयानक रोग) का इतना भारी प्रहार हुआ कि डाक्टरों ने कहा कि आप्रेशन होना चाहिए। कुछ लोगों ने कहा कि कुछ यूनानी दवाओं के द्वारा बिना आप्रेशन के भी आराम हो जाता है इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रज ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल को तार द्वारा सूचित कर दिया कि जिस स्थिति में भी हों, आ जाएँ। आप अपने क्लीनिक में बैठे हुए थे, कोट भी नहीं पहना हुआ था, पैसे भी पास नहीं थे। सज़्भवतः आप हकीम ग़ुलाम मुहज़्मद साहब को साथ लेकर बटाला पहुंचे। स्टेशन पर जाकर बैठे और चलने में कमज़ोर थे परन्तु इसके बावजूद क्यूँकि आदेश हुआ कि तुरन्त पहुंचो, इसी प्रकार चलकर पैदल बटाला पहुंच गए। अब देखें, यह निष्ठा एंव आज्ञा पालन है कि तेज़ चलने में आपको कठिनाई होती थी परन्तु आदेश

हुआ तो बटाला तक, लगभग गयारह मील की दूरी, पैदल पहुंचे हैं। हकीम साहब ने कहा कि अब किराए इत्यादि का क्या प्रबन्ध होगा। हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल ने फ़रमाया कि यहाँ बैठो अल्लाह तआला स्वयं ही कोई व्यवस्था कर देगा। तवक्कुल अर्थात विश्वास की यह अनूठी मिसाल है। इतने में एक व्यक्ति आया और पूछा कि क्या आप हकीम नूरुद्दीन साहब हैं, आपने फ़रमाया, हाँ। वह व्यक्ति कहने लगा कि अभी गाड़ी के आने में दस पन्द्रह मिन्ट हैं और मैंने स्टेशन मास्टर से कह ज़ी दिया है कि वह आपकी प्रतीक्षा करे। मैं बटाला का तहसीलदार हूँ, मेरी बीवी अत्यधिक बीमार है, आप तनिक चलकर उसे देख आएँ। आप गए, रोगी को देखकर उसका उपचार देज़ा और स्टेशन पर वापस आ गए। वह व्यक्ति भी साथ आया, तहसीलदार और कहा कि आप चलकर गाड़ी में बैठें, मैं टिकट लेकर आता हूँ और साथ ही पचास रुपए नक़द दिए तथा बोला यह तुच्छ सी भेंट है, इसे स्वीकार करें। आप देहली पहुंचे और जाकर मीर साहब का इलाज किया। हज़रत मुस्ले मौऊद फ़रमाते हैं कि यह सञ्पूर्ण विश्वास का स्तर है। तवक्कुल के उच्च स्तर पर जो लोग होते हैं वे किसी से मुंह से नहीं मांगते, अल्लाह तआला लोगों का ध्यान इस ओर फेर देता है तथा प्रबन्ध कर देता है। परन्तु वे स्वयं जिनको भरोसा होता है अल्लाह पर, वे स्वयं किसी के पास नहीं जाते बल्कि अल्लाह तआला स्वंय भेजता है उनकी आवश्यताओं की पूर्ति के लिए। तो यह सञ्पूर्ण विश्वास का बड़ा उच्च स्तर है जो आपको प्राप्त था। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि मुझे याद है कि एक बार एक रोगी आया और उसने बताया कि मैंने एक बार मौलवी साहब से इलाज कराया था जिससे मुझे बड़ा लाभ हुआ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस दिन बीमार थे परन्तु जब आपने यह बात सुनी तो उसी समय उठ कर बैठ गए और हज़रत अञ्मां जान रज़ीअल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाने लगे कि अल्लाह तआला ही मौलवी साहब को प्रेरणा देकर यहाँ लाया है और अब हज़ारों लोग उनसे लाभान्वित हो रहे हैं। यदि मौलवी साहब यहाँ न आते तो इन लोगों का किस प्रकार इलाज होता। अतः मौलवी साहब का अस्तित्व भी ख़ुदा तआला का बड़ा उपकार है। यह आभार था परन्तु अश्तियोक्ति नहीं थी।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की विनम्रता जो अपनी चरम सीमा पर थी उसका वर्णन एक सहाबी के द्वारा हज़रत मुस्लेह मौऊद ने किया है। कहते हैं, एक सहाबी का वृत्तांत बयान करते हैं, वे बयान करते हैं कि मैं एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मिलने के लिए आया, आप मस्जिद मुबारक में बैठे हुए थे और द्वार के पास जूतियाँ पड़ी थीं। एक आदमी सीधे साधे कपड़ों वाला आ गया और आकर जूतियों में बैठ गया। यह सहाबी कहते हैं कि मैंने समझा कि यह कोई जूती चोर है, इस कारण से मैंने अपनी जूतियों की निगरानी शुरु कर दी, कहीं वह लेकर भाग न जाए। कहने लगे इसके कुछ समय के पश्चात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निधन हो गया और मैंने सुना कि आपके स्थान पर कोई अन्य व्यक्ति ख़लीफ़ः बन गया है। इस पर मैं बैअत करने के लिए आया, जब मैंने बैअत के लिए अपना हाथ बढ़ाया तो क्या देखता हूँ कि वही व्यक्ति था जिसे मैंने अपनी मूर्खता के कारण चोर समझा था अर्थात ख़लीफ़ः अव्वल, और मैं अपने दिल में बड़ा लज्जित हुआ। अल्लाह तआला आपके दर्जे बुलन्द फ़रमाता चला जाए तथा आपके नाम पर फ़साद करने वालों को भी समझ दे, बुद्धि प्रदान करे और हमें भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आशा के अनुसार इस उदाहरण से सीख लेने की क्षमता प्रदान करे।

आज मॉरीशस का जलसा सालाना भी हो रहा है और मॉरीशस में अहमदिय्यः जमाअत को स्थापित हुए एक सौ साल हो चुके हैं। वे अपनी शताब्दी मना रहे हैं। अल्लाह तआला उनका यह जलसा भी प्रत्येक दृष्टि से बरकत वाला बनाए तथा ये सौ वर्ष वहाँ भविष्य में नई प्रगति की भूमिका बने तथा नई नई योजनाएँ बनाएँ, वहाँ कुछ उपद्रवी भी हैं, अल्लाह तआला उनसे भी जमाअत को सुरक्षित रक्खे और हर एक कठिनाई से बचाए तथा हर प्रकार से जलसे को तथा उनके प्रोग्रामों को बरकत वाला बनाए।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 13.11.2015

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*